भजन

पिया आप हैं धाम के दूल्हा, बख्शो सबकी भूल
हम अंगना हैं आपकी, मेरी विनती करो कबूल
अपने रंग में रंग लो पिया, पूरो हमारी आस
आठों सागर में जो रंग हैं, सब हैं तुम्हारे पास

1–पहला सागर याद दिलाये,रंग श्वेत है मोहे भाये
नूर पिया का जो दर्शाये,धाम के कण कण में है समाये
रंग उसी में मैं रंग जाऊं,ऐसी रंग दो मैं रंग जाऊं
पिया गुन गाऊं मैं तो,पिया गुन गाऊं

2– दूसरा सागर रंग लाल का,नीर सागर रूहों की शोभा
रंग वो कैसा है मेरे पिया जी,बिन देखे अब चौन न आए

3– सागर तीसरा एकदिली का,पीला सागर है वाहेदत का
एक अंग रंग ढंग एक है,एकदिली की शोभा ये है
एक रंग में भीगे सारे,पिया पिया मिल सारे पुकारें
एकदिली पे बलि बलि जाऊं

4– चौथा सागर श्रृंगार पिया का,रंग हरा है दधि सागर का
भेद सुहागिन जाने है इसका,सुख क्यूंकर कहूं मैं इसका
रूह के नैनों से जो देखे,कई रंग रस और छवि विसेखे
मीठे मुख पर बलि बलि जाऊं

भजन

5– पांचवां सागर जो है इश्क का,आसमानी रंग है जिसका
प्याले इश्क दरियाव के,पीवें नैनों से रूहें बैठ के
इन रस को ये सागर है,जो पूर्ण जुगल किशोर है
सागर उसी में मैं खो जाऊं

6– अति बड़ा छठा सागर है,इलम खुदाई का आखिर है
शक नहीं कोई इसमें है,हक हुकम हकीकत जिसमें है
निसवत से मैं जिसको पाऊं

7– सागर सातवां निसवत भरपूर,जो है नूर के नूर को नूर
खूबी क्योंकर कहूं मैं इसकी,
वास्ते निसवत खुली हकीकत जिसकी
निसवत से मैं जिसको पाऊं

8–सागर आठवां शोभा अति लेत,लेहेरें इन सागर सुख समेत
देत धनी रूहों कर हेत,निज नजर खोले सोई लेत
मेहर धनी की जब मैं पाऊं,रंग पिया के मैं रंग जाऊं